जब शैतान मुश्किल में डाल दे
(4:1-7)

पृथ्वी पर शैतान जीवित है और अच्छा भला है।[1] ''क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)।

प्रकाशितवाक्य 12 में शैतान और उसके उद्देश्यों को चित्रित किया गया है। अध्याय के आरम्भ में एक गर्भवती महिला और बड़े लाल अजगर का दृश्य दिखाया गया है। वह अजगर इस उम्मीद में जच्चा के सामने था कि कब वह बच्चे को जन्म दे और वह उसे निगल जाए। आयत 9 में बताया गया है कि वह अजगर शैतान ही है; और वह बच्चा मसीह है।[2] अन्य शब्दों में, शैतान का उद्देश्य यीशु को उसके जन्म के समय ही नाश करना था। सुसमाचार के वृत्तांत हमें हेरोदेस द्वारा छोटे बालकों को मरवाने से लेकर क्रूस तक शैतान के इन क्रूर प्रयासों के बारे में बताते हैं। यद्यपि, शैतान यीशु को नाश करने में नाकाम रहा। प्रेरितों 12:5 हमें बताता है कि वह बच्चा ''परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया'' – जो यीशु के स्वर्गारोहण का हवाला है। अजगर ने उस बच्चे का पीछा करने की कोशिश की परन्तु उसे खुद को ही पृथ्वी पर फेंक दिया गया। उसने अपना क्रोध औरत पर उतारना चाहा परन्तु परमेश्वर ने उस औरत की रक्षा की । इस प्रकार ''अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष संतान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर है, लड़ने को गया'' (प्रकाशितवाक्य 12:17)। ''परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने और यीशु की गवाही देने वाले'' लोग *मसीही* ही हैं! क्योंकि शैतान यीशु को नाश नहीं कर सका, अब वह किसी भी कीमत पर *मेरा और आपका* नाश करना चाहता है!

यह पाठ हमें कलीसिया का नाश[3] करने के शैतान के प्रयासों के आरम्भ के बारे में बताता है। प्रारम्भिक कलीसिया में शांति और स्थिरता थी, परन्तु यह तो ''तूफान से पहले की खामोशी थी।'' शैतान कभी भी परमेश्वर के लोगों को अधिक देर के लिए अकेले नहीं छोड़ता।

पिछले पाठ में, हमने प्रेरितों 3 अध्याय का अध्ययन किया था। पतरस और यूहन्ना ने मन्दिर में एक लंगड़े आदमी को चंगा किया था। उत्सुक भीड़ के वहां जमा होने पर, पतरस ने उन्हें सुसमाचार सुनाया था। अचानक ही, उसके प्रवचन को रोक दिया गया, और मसीहियों पर अत्याचार आरम्भ हो गया। इस पाठ, और अगले दो पाठों में, हम इन प्रेरितों की प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं, सो हम देखेंगे कि ''जब शैतान हमें मुश्किल में डाल दे'' तो

हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए।

अचम्भित न हों (4:1-3)

पौलुस ने कहा कि ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए *जाएंगे*'' (2 तीमुथियुस 3:12)। पतरस ने कहा, ''जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुम में भड़की है, इससे ... अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है'' (1 पतरस 4:12)। जब कष्ट आता है तो इसमें चकित होने वाली बात नहीं है।

यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी थी, ''वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे[4] और सताएंगे, और पंचायतों में सौंपेंगे और बन्दीगृह में डलवाएंगे ... और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे'' (लूका 21:12, 17)[5]। प्रश्न यह नहीं था कि *क्या* कष्ट आएंगे बल्कि प्रश्न यह था कि *कब* आएंगे। जब पतरस और यूहन्ना को रोका गया तो इस प्रश्न का उत्तर मिल गया:

> जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए। क्योंकि वे बहुत क्रोधित हुए कि वे लोगों को सिखाते थे और यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे। और उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो गई थी (1-3 आयतें)।

जिन्होंने प्रेरितों को गिरफ़्तार किया था, वे यरूशलेम में धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक नेता और शहर के शक्तिशाली लोग थे!

वे ''याजक'' ही सम्भवतः ''महायाजक'' थे (पद 23), ''जितने (याजक) महायाजक के घराने के'' (आयत 6) लोग थे, उनके साथ वे याजक जो मन्दिर के कामों को सम्भालते थे।[6] ''मन्दिर का प्रमुख पहरेदार'' मन्दिर की सुरक्षा के लिए जवाबदेह था;[7] महायाजक के बाद वह दूसरा अधिकारी था। ''सदूकी'' संख्या में कम थे परन्तु मन्दिर और फलस्तीन में उनका नियंत्रण था।[8] महायाजक सदूकी ही था; सभा में अधिकतर लोग सदूकी थे (5:17)। रोम के साथ सहयोग करने के कारण, सदूकी देशभर में एक शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति थी। शैतान ने कलीसिया पर अत्याचार आरम्भ करने के लिए सबसे आगे ''इसी दल को भेजा।''

अत्याचार ''शहर के कुलीन लोगों,'' धार्मिक अगुओं, यहां तक कि कलीसिया के सदस्यों की ओर से जी हो सकता है (2 कुरिन्थियों 11:26)! शैतान किसी को जी इस्तेमाल कर सकता है और करेगा (मत्ती 16:23 पर ध्यान दें)।

सताए जाने पर हमें अचम्भा नहीं करना चाहिए। पतरस और यूहन्ना ने परमेश्वर या मनुष्य का कौन सा विधान तोड़ा था? कोई नहीं। उन्होंने तो एक लंगड़े को चंगा किया था और वचन सुनाया था। परन्तु इससे उस समय के शक्तिशाली लोग भयभीत हो गए।[9] पतरस

और यूहन्ना की सेवकाई ने सत्ता के दलालों को तीन कारणों से परेशान किया:

(1) पतरस और यूहन्ना ''लोगों को शिक्षा दे रहे थे।'' उनको यही *बात* अच्छी नहीं लगी कि पतरस और यूहन्ना शिक्षा दें; शिक्षा देना वे अपना विशेषाधिकार समझते थे। सबसे बढ़कर, उन्हें वह पसन्द नहीं था *जिसकी* शिक्षा पतरस और यूहन्ना दे रहे थे; अन्य बातों के साथ प्रेरितों ने उन पर मसीह की हत्या का आरोप लगाया था (3:14, 15)!

(2) पतरस और यूहन्ना ''यीशु का ... प्रचार करते थे।'' जब रोमी सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर टांग दिया तो यहूदी अगुओं ने समझा कि उन्हें उस उपद्रवी से छुटकारा मिल गया, परन्तु अब यीशु के चेले उनसे बढ़ गए थे, जितने उसके पृथ्वी पर रहते समय थे!

(3) पतरस और यूहन्ना ''यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे।'' वे केवल यही प्रचार नहीं करते थे कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है, बल्कि वे यह भी प्रचार कर रहे थे कि यीशु के द्वारा दूसरे लोग भी मरे हुओं में से जी उठ सकते हैं!''[10] कुछ बातों ने सदूकियों को और भी परेशान कर दिया![11] वे पुनरुत्थान में विश्वास नहीं रखते थे; उनका विश्वास अलौकिक बातों में भी नहीं था। (निश्चित ही वे शैतान को भी नहीं मानते थे, जिसका वर्णन हमने आरम्भ में किया!) माना कि पतरस और यूहन्ना ने कोई कानून नहीं तोड़ा था, परन्तु उन्होंने एक अलग बात बताकर गड़बड़ी फैला दी थी और इसके परिणाम धार्मिक नेताओं के लिए घातक हो सकते हैं!

जब हम मसीहियों को किसी भलाई करने के बदले में शैतान मुश्किल में डाल देता है तो हमें आश्चर्य होता है। ''हमने किसी को दुख नहीं दिया!'' हम विरोध करते हैं। पौलुस ने कहा, ''जितने मसीह यीशु में *भक्ति के साथ* जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। यीशु जो ''सब से ... भलाई करता'' था (10:38), उसे भी क्रूस पर चढ़ा दिया गया।

फिर, वचन पर विश्वास करके उसकी शिक्षा देने के लिए उपहास बनने पर कुछ लोग अचम्भित होते हैं।[12] तो इसमें संदेह न करें। यदि हमारा जीवन सही है और हम परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे हैं, तो शैतान टिक नहीं सकता! वह हमारी गवाही को निष्फल करने के लिए लगा ही रहता है, इस बात का ध्यान रखें!

यहूदी अगुओं ने पतरस और यूहन्ना को गिरफ़्तार करके ''दूसरे दिन तक हवालात में रखा[13] क्योंकि संध्या हो गई थी।''[14] उन्हें अगले दिन तक कुछ कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करना होगा;[15] इस मामले का निर्णय करने के लिए उन्हें अधिक समय की आवश्यकता होगी (आखिर प्रेरितों ने कुछ भी तो गलत नहीं किया था); या यह भी हो सकता है कि वे पतरस और यूहन्ना को बन्दीगृह का स्वाद चखाना चाहते हों ताकि उन्हें समझ आ जाए कि उनके अधिकार को चुनौती देने का क्या अर्थ था। पतरस और यूहन्ना को गिरफ़्तार करने का उनके पास कोई वैधानिक आधार नहीं था, कम से कम गिरफ़्तार करने का तो नहीं (ध्यान दें आयत 21), परन्तु यीशु पर मृत्यु-दण्ड का आरोप लगाने वालों को ऐसी ''तकनीकी'' बातों की परवाह कहां थी।

हाथ खड़े न करें[16] (4:4-6)

जब शैतान हमें सताने लगता है तो, हममें से कुछ निराश होकर कहते हैं: ''कुछ लाभ नहीं होने वाला! अच्छा होगा कि हम छोड़ ही दें!'' ध्यान दें, हो सकता है कि शैतान हम पर मुश्किलें इसलिए ला रहा हो क्योंकि वह जानता है कि अगर हम डटे रहे तो प्रभु के लिए बड़े-बड़े काम हो जाएंगे! यदि प्रचार करते हुए मुझे गिरज़्तार कर लिया जाता और फिर रात जेल में गुज़ारनी पड़ती, तो शायद मैं यह सोचने लगता कि प्रचार की कोशिश असफल हो गई। परन्तु, पतरस के संदेश के परिणामों पर ध्यान दें, ''परन्तु वचन के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया; और उनकी गिनती पांच हज़ार पुरुषों के लगभग हो गई'' (आयत 4)। ये लोग जानते थे कि पतरस और यूहन्ना को गिरज़्तार कर लिया गया है, परन्तु इससे उनके मसीही बनने में कोई रुकावट नहीं आई। वचन सुनाने वाले बन्दीगृह में थे, परन्तु वचन नहीं था परमेश्वर का वचन यदि निष्कपट मन से स्वीकार किया जाए तो यह शक्तिशाली होता है (लूका 8:15; रोमियों 1:16)।

आयत 4 में शब्द ''विश्वास किया'' का अर्थ केवल यीशु को मसीह स्वीकार करने तक ही सीमित नहीं था। ''विश्वास'' को ''भरोसा करके आज्ञा मानने'' के व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है।[17] प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तन की कुछ ही घटनाओं को विस्तार से बताया गया है;[18] शेष के लिए संक्षेप में बताया गया है, जैसे कि ''विश्वास करने वाले ... प्रभु की कलीसिया में ... मिलते रहे'' (5:14) या '' ... एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया'' (6:7)। क्योंकि ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (10:35), इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि जिनका उल्लेख आयत 4 में किया गया है, उन्होंने भी उसी प्रकार मन फिराकर बपतिस्मा लिया होगा जिस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन तीन हज़ार लोगों ने लिया था। चर्च ऑफ़ इग्लैंड की एक टैक्सट बुक में बताया गया है, ''लगभग पांच हज़ार यहूदियों ने चंगाई के आश्चर्यकर्म को देखा या सुना, उन्होंने पतरस की चुनौती को स्वीकार किया और कलीसिया में बपतिस्मा लिया।'' प्रेरितों 3 में अपने संदेश में यदि पतरस बपतिस्मे का वर्णन न करता,[19] तो उन्हें बपतिस्मा लेने के बारे में कैसे पता चलता? लोग हर रोज़ बपतिस्मा ले रहे थे (2:41, 47)! बपतिस्मे के गवाह मसीहियों की भीड़ यरूशलेम में आम नज़र आती होगी! बपतिस्मा लेने का फैसला करने वाले हर व्यक्ति को पता होता होगा कि बपतिस्मा कैसे लिया जाता है।

आयत 4 में अनुवादित शब्द ''पुरुषों'' साधारण शब्द *एन्थ्रोपॉस* से नहीं लिया गया, जिसमें पुरुष और स्त्री दोनों हो सकते हैं।[20] बल्कि, इसे विशेष शब्द 'अनेर' से लिया गया है, जिसका अर्थ ''स्त्री से भिन्न एक पुरुष'' है। क्योंकि शब्द ''पांच हज़ार पुरुषों के लगभग'' विशेषकर पुरुषों के लिए ही प्रयोग किया गया है, इसलिए हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि वहां कितने सदस्य इकट्ठे हुए थे।[21] कम से कम दस हज़ार तो होंगे ही![22] जैसे तेल से लगी आग में पानी डालने से आग फैल जाती है; बिल्कुल उसी प्रकार कलीसिया को नष्ट करने की हर कोशिश से कलीसिया का फैलाव ही हुआ!

परन्तु, प्रेरितों को गिरफ़्तार करना और रातभर बन्दीगृह में रखना उनकी गवाही को निष्फल करने की शैतान की कोशिश का आरम्भ ही था। अगली सुबह, एक शक्तिशाली गुट प्रेरितों के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए इकट्ठा हुआ:

> दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार और पुरनिये और शास्त्री और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे: सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए (पद 5, 6)।

''सरदार'' (अधिकारी) तो ''महायाजक'' ही थे (आयत 23)। ''पुरनिये'' वे, वृद्ध अगुवे थे जो बुद्धिमता और प्रौढ़ता के लिए प्रसिद्ध थे। ''शास्त्रियों'' को व्यवस्था के शिक्षक माना जाता था। इन तीनों गुटों को मिलाकर ही सन्हेद्रिन की संचालक-समिति बनती थी।[23] सन्हेद्रिन यहूदियों की महासभा (5:21) और सर्वोच्च न्यायालय को कहा जाता था।[24] उस सुबह फलस्तीन की यह विशिष्ट सभा यह फैसला लेने के लिए इकट्ठी हुई कि गलील के इन दो मछुआरों के साथ क्या किया जाए!

इस परिस्थिति का आकर्षण इस सूची में रेखांकित किया गया है। ''महायाजक हन्ना'' उनमें था। ''महायाजक'' एक मानद उपाधि थी।[25] हन्ना *पूर्व*-महायाजक था। महायाजक के रूप में कई वर्ष सेवा करने के बाद रोमियों ने उसे पदच्युत कर दिया था। परन्तु, ज्यादातर यहूदी अभी ज़ी उसे महायाजक मानते थे, और इस पदवी पर नियुक्ति के लिए इसका विशेष योगदान था।[26] कैफा, हन्ना का दामाद था और वर्तमान महायाजक था (मत्ती 26:57; यूहन्ना 18:13, 24)। यूहन्ना और सिकन्दर के बारे में हमें निश्चित रूप से मालूम नहीं, परन्तु इतना स्पष्ट है कि वे प्रभावशाली व्यक्ति थे, जिनसे लूका के पाठक परिचित थे। हो सकता है कि वे हन्ना या कैफा के पुत्र हों और महायाजक बनने के दावेदार हों।[27] किसी न किसी प्रकार, वे ''महायाजकों के घराने'' से ही थे। लूका ने यह भी टिप्पणी की कि ''*जितने* महायाजक के घराने के थे'' वे सब वहां थे।[28]

यदि मैं पतरस और यूहन्ना की जगह होता, जिसे देश के सबसे शक्तिशाली लोगों के सामने बुलाया जाता, तो ऐसी परिस्थिति मुझे *निराश* कर देती। पतरस और यूहन्ना ने इसे *अवसर* माना। अपने चेलों को चेतावनी देते हुए कि वे सताए जाएंगे, यीशु ने कहा था कि ''वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएंगे, और पंचायतों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएंगे, और राजाओं और हाकिमों के साम्हने ले जाएंगे। पर *यह तु हारे लिए गवाही देने का अवसर हो जाएगा*'' (लूका 21:12, 13)। महासभा (सन्हेद्रिन) में प्रचार करने के लिए पतरस और यूहन्ना को अवसर कैसे मिल सकता था? इस अवसर को पाने का एक ही ढंग था कि उन्हें बांधकर वहां ले जाया जाए!

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आगे चलकर हम देखेंगे कि जब भी एक मसीही को न्यायालय में घसीटा गया, उसने इसमें अपना बचाव करने के लिए अपना पक्ष नहीं रखा, बल्कि इसे यीशु का प्रचार करने के अवसर के रूप में प्रयोग किया!

जब शैतान हमें मुश्किल में डालता है और ऐसी परिस्थितियों में हम हाथ खड़े किए बिना आंखें खुली रख हिज़्मत नहीं हारते हैं, तो हमें ऐसे अवसर मिल सकते हैं जो पहले कभी नहीं मिले!

शैतान के हाथों की कठपुतली न बनें (4:7, 8)

आयत 5 कहती है कि ''दूसरे दिन'' सभा के सदस्य ''यरूशलेम में इकट्ठे हुए और उन्हें [प्रेरितों को] बीच में खड़ा करके पूछने लगे, कि 'तुम ने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया है?' '' (आयत 7)। मान लीजिए कि आप प्रेरितों में से एक हैं और आपके चारों ओर अर्धचक्र में काले चोगे पहने और आपको घृणा भरी निगाह से देख रहे इकहत्तर न्यायाधीश[29] बैठे हैं। उनके पीछे और लोग हैं, वे भी उतने ही विरोधी हैं।[30] हर ओर न्यायालय के अधिकारी हैं। सारी घृणा का केन्द्र, यही तीन लोग हैं – आप, दूसरा प्रेरित और वह व्यक्ति जो चंगा हुआ था।[31] आप ढूंढ रहे हैं कि केवल एक ही चेहरा ऐसा मिल जाए जो आपके पक्ष में हो – परन्तु कोई नहीं मिलता। फिर आप याद करते हैं कि इन्हीं लोगों ने यीशु पर मृत्यु-दण्ड का दोष लगाया था! यह परिस्थिति प्रेरितों को भयभीत करने के लिए बनाई गई थी। *मैं* निश्चय ही डर गया होता!

औपचारिक बैठक आरज़्भ होने के साथ ही हम देख रहे हैं कि पहले हुई बातों को ही दोहराया जा रहा है। कार्यवाही का आरज़्भ उनके दोषों को औपचारिक रूप में पढ़ने से होना चाहिए था। परन्तु इसका आरज़्भ एक अनिश्चित से प्रश्न के साथ हुआ: ''वे पूछने लगे, तुम ने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया?''[32] ''यह काम'' किसे कहा गया: चंगाई को, प्रचार को, या किसी और बात को? इस प्रतिष्ठित ज्यूरी के पास प्रेरितों को पकड़ने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था (आयत 21)। और उन्हें उज़्मीद थी कि पतरस और यूहन्ना इसका अनुचित उत्तर देंगे और इससे उन्हें सज़ा देने का बहाना मिल जाएगा। ऐसा ढंग अपनाने के बारे में हमने और कहां देखा है? यीशु के ''मुकद्दमे'' में (लूका 22:66-71)। पतरस और यूहन्ना के मुकदमे के समय भी वही चेहरे, वही पूर्वधारणा, वही कपट, वैसे ही प्रश्न हैं! यहूदी अगुवे इसी ताक में थे कि उन्हें कोई ऐसा सूत्र मिल जाए जिसके द्वारा वे प्रेरितों के प्रभाव को कम कर सकें![33]

यद्यपि यह प्रश्न अनिश्चित था, परन्तु इसमें तीन शक्तिशाली फंदे थे। उन्होंने पहले यह पूछा, ''तुम ने यह काम किस *सामर्थ* से ... किया है?'' सामर्थ शब्द उसी यूनानी शब्द का अनुवाद है जैसे ''आश्चर्यकर्म या चमत्कार''[34] और इसका अनुवाद ''चमत्कारिक सामर्थ'' हो सकता था। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, जादूगरी का दण्ड मृत्यु था। यदि प्रेरितों की बात से ऐसा लगता कि यह काम उन्होंने जादू से किया है, तो उन्हें मृत्यु दण्ड मिल सकता था।

फिर, सभा ने पूछा, ''तुम ने यह काम ... किस *नाम* से किया है?'' ''नाम'' को ''अधिकार''[35] के लिए ही प्रयोग किया गया है। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ दिन पूर्व, इसी आदमी ने उसके पास आकर पूछा था, ''तू यह काम किस के अधिकार से करता

है ? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है ?'' (मत्ती 21:23)। अब उन्होंने वही प्रश्न प्रेरितों से पूछा। दोनों ही मामलों में, वे यह जता रहे थे कि ''अधिकार तो हमारे पास है। *तु हारी* हिज़्मत कैसे हुई कि ऐसा कुछ करो जिससे यह लगे कि तुज़्हारे पास अधिकार है।'' उन्हें आशा थी कि प्रेरित अपने अधिकार के स्रोत कुछ अनिश्चित बताएंगे।

तीसरा फंदा बहुत ही चालाकी भरा और ज्यादा घातक था। हिन्दी के अनुवाद में चूक हो सकती है। मूल में, वाक्य पर अधिक ज़ोर देने के लिए ''तुम'' शब्द को अन्त में दिया गया है। वाक्य को पढ़ते समय ''तुम'' शब्द पर ज़ोर देना चाहिए: ''किस सामर्थ से, अर्थात किस नाम से, *तुमने* यह काम किया है ?'' अन्य शब्दों में, ''हमारी ओर देखो और अपनी ओर भी देखो, *तुम* अपने आप को क्या समझते हो कि हमारे अधिकार को चुनौती दे सको ?'' उनके विचार में प्रेरित ''अनपढ़ और साधारण मनुष्य'' थे (आयत 13)। पतरस और यूहन्ना से पूछताछ करते समय उनके प्रश्नों में कपट था। प्रश्न और उसके पूछने का ढंग ऐसा था जिससे प्रेरितों का क्रोध बाहर निकल सके। अधिकारियों का ध्यान नीतिवचन की उस बात पर था ''जहां बहुत बातें होती हैं, वहां अपराध भी होता है'' (नीतिवचन 10:19)।

जब शैतान आपको मुश्किल में डालता है, तो वह चाहता है कि आप उसके हाथों की कठपुतली बनें। वह आपकी प्रतिक्रिया चाहता है; वह चाहता है कि आप बुराई के बदले बुराई ही करें। यदि वह आपको अपने हाथों की कठपुतली बनाने में सफल हो जाता है, तो जीत उसी की है!

यदि मैं वहां खड़ा होता, और मेरी भावनाएं दबाई और कुचल दी जातीं, तो सज़्भवत: मैं उस सभा के हाथों की कठपुतली बन जाता और क्रोध मेरी जीभ पर काबू पा लेता। परन्तु ध्यान दें, पतरस ने कैसे उत्तर दिया, ''तब पतरस ने ... उनसे कहा, 'हे लोगों के सरदारो और पुरनियो ... ' '' (आयत 8)। उस सभा को सज़्बोधित करने के लिए ''सरदारो और पुरनियो'' आदरपूर्ण व्यवहार था। एक लेखक ने इसका अनुवाद ''हमारे देश के सज़्माननीय अगुओ और बज़ुर्गो'' किया है। अपना पक्ष रखते हुए पतरस ने नम्रता से बात की! ''आत्मा की तलवार नमक के लेप के बिना ही गहराई तक असर कर देगी।''हमें सब के साथ नम्र होना चाहिए, इसलिए नहीं कि *वे* ऐसे हैं जैसा उन्हें होना चाहिए था, बल्कि इसलिए कि *हम* वह बनने की कोशिश कर रहे हैं जो हमें होना चाहिए!

अगली बार यदि शैतान आप को मुश्किल में डाल दे, तो सज़्भवत: आपको भी अपने दुख देने वाले के जैसे ही चिड़चिड़ा और घृणात्मक बनने की चुनौती दी जाएगी, लेकिन यीशु ने तो कहा कि अपना दूसरा गाल भी उसकी ओर फेर दे (मत्ती 5:39)। शैतान आपको अपने हाथों की कठपुतली बनाने में सफल न होने पाए!

सारांश

अगले पाठ में ''जब शैतान मुश्किल में डाल दे'' पर यह अध्ययन जारी रखेंगे। परन्तु अब आइए थोड़ा रुक कर अपनी जांच करें: ''क्या शैतान ने मुझे कभी मुश्किल में डाला है ? यदि हां, तो मैंने क्या किया ? क्या मैंने एक मसीही की तरह उसका उत्तर दिया, या मैंने

शैतान जैसा काम किया?'' आप का उत्तर जो भी हो अब निश्चय कर लें कि *अगली* बार जब शैतान आप को सताए, तो आप उसी प्रकार काम करेंगे जैसे परमेश्वर से सहायता प्राप्त करके करना चाहिए।

प्रवचन नोट्स

''द फर्स्ट अपोज़िशन'' अर्थात पहला विरोध नामक शीर्षक से 4:1-31 पर रिचर्ड रोजर्स का एक प्रवचन है। इस के चार मुज़्य प्वाइंट हैं: विरोध का प्रदर्शन (4:1-7), विरोध का सामना (4:8-12), विरोध की तुलना (4:13-22), विरोध का कम होना (4:23-31)।

पादटिप्पणियां

[1]उसे क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा सीमित कर दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 12:11)। न तो वह और न उसके भूत लोगों की इच्छा के विरुद्ध उनमें आ सकते हैं जिस प्रकार वे नये नियम के समय में करते थे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सक्रिय नहीं है या उसके पास कोई शक्ति नहीं है। [2]हमें यह मालूम है क्योंकि मसीह से सज़्बन्धित भजन, भजन संहिता 2 को प्रकाशितवाक्य 12:5 में उसका वर्णन करने के लिए प्रयोग किया गया है। [3]प्रेरितों के काम की पुस्तक में शैतान से सज़्बन्धित कुछ हवालों के लिए, देखिए प्रेरितों 5:3; 13:10; 26:18. [4]यीशु के *नाम* पर दिए ज़ोर पर ध्यान दीजिए - यह ज़ोर हमने अपने पिछले पाठ में दिया था जो कि इस पाठ में भी रहेगा। [5]पूरा हवाला लूका 21:12-17 में देखिए; मत्ती 10:17, 18; यूहन्ना 15:18-16:4 भी देखिए। [6]नये नियम के समयों तक बहुत से याजक थे, जिन्हें याजकाई के काम को करने की आवश्यकता नहीं थी। वे चौबीस *श्रेणियों* में बंटे हुए थे, जिनमें प्रत्येक को मन्दिर में सप्ताह में एक बार के लिए दिया जाता था (ध्यान दें लूका 1:8)। निरन्तरता प्रदान करने के लिए, कुछ याजक मन्दिर की आराधना के प्रत्येक काम को देखने के लिए नियुक्त किये जाते थे। इन याजकों का अधिकार ''साधारण'' याजकों से अधिक था; इस कारण इन्हें ''प्रधान याजक'' कहा जाता था। इन नियुक्तियों में राजनीति प्रवेश कर गई थी। [7]जब दाऊद ने मन्दिर के लिए तैयारी की, तो उसने कुछ निश्चित लेवियों को ''द्वारपाल'' नियुक्त किया (1 इतिहास 26:1-19)। इसका अर्थ यह कदापि नहीं था कि वे केवल द्वारों को ही खोलते और बन्द करते थे। बल्कि, वे मन्दिर की ''रखवाली'' भी करते थे; शांत और श्रद्धाभाव का वातावरण बनाए रखना उनकी ज़िज़्मेदारी थी। याजक ''द्वारपालों'' के ऊपर ''सरदार'' होता था। यह उसकी ज़िज़्मेदारी होती थी कि दिन के समय और रात के समय विभिन्न द्वारों पर संतरियों को ठहराए। लूका 22:4, 52 ''मन्दिर के पहरुओं के सरदारों (बहुवचन)'' की बात करता है (लूका 22:4, 52 में उसी यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है जो प्रेरितों 4:1 में है), जिससे यह पता चल सकता है कि वे शिफ़्टों में काम करते थे या मन्दिर में अन्य ड्यूटियों की तरह यह ड्यूटी भी बदलती रहती थी। पुनः, इन नियुक्तियों में राजनीति का प्रवेश था। मन्दिर राजनीतिक भ्रष्टाचार का अनुकूलतम विकास स्थल बन चुका था। [8]शब्दावली में देखिए ''सदूकी।'' यह जानकर आश्चर्य होता है कि आरज़्भ में चेलों का विरोध करने में फरीसियों ने नहीं बल्कि सदूकियों ने नेतृत्व किया। यीशु के अधिकतर विवाद सदूकियों के साथ नहीं बल्कि फरीसियों के साथ होते थे। परन्तु, प्रेरितों का आरज़्भिक प्रचार पुनरुत्थान पर केन्द्रित था क्योंकि फरीसी मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास रखते थे, सदूकी नहीं (23:6-8)। इसलिए स्वाभाविक ही था कि आरज़्भ में सबसे अधिक परेशानी सदूकियों को ही हुई। [9]उन्होंने वही धमकी दी जो यीशु को दी थी (ध्यान दें यूहन्ना 11:45-53)। [10]प्रेरितों द्वारा यीशु के *ही*

पुनरुत्थान की बात करते समय शब्द सामान्यत: वैयक्तिक और स्पष्ट थे: ''जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया'' (3:15)। अवैयक्तिक और साधारण शब्दों ''मृतकों के पुनरुत्थान'' से बहुत से टीकाकारों और अनुवादकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रेरित यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान से मुड़कर साधारण शारीरिक पुनरुत्थान के वायदे की ओर हो लिए (1 कुरिन्थियों 15:20-29)। द न्यू सैंचुरी वर्ज़न में इसे ''प्रचार कर रहे थे कि लोग यीशु की सामर्थ से मरे हुओं में से जी उठेंगे'' अनुवाद किया गया है। सी. ऍच. रियू के अनुवाद में ''यीशु की घटना का हवाला देकर मरे हुओं के जी उठने की शिक्षा को प्रमाणित करने का प्रयास कर रहे'' है।

[11]यीशु की मृत्यु से कुछ दिन पूर्व इस विषय पर उन्होंने उसका सामना किया था (मत्ती 22:23-33)। [12]अमेरिका में रहने वाले जो लोग ''बाइबल बैल्ट'' में रहते हैं, वे सुरक्षित हैं। कइयों ने परमेश्वर के वचन का उपहास होते कभी नहीं सुना। परन्तु यह सज़्पूर्ण तौर पर समस्त संसार के लिए नियम न होकर अपवाद ही है। [13]सज़्भवत: यह मन्दिर की परिधि में एक कमरा था। [14]पतरस का प्रवचन शाम के 3 बजे मध्याह के आस-पास आरज़्भ हुआ और इसमें रुकावट तब पड़ी जब लगभग शाम हो चुकी थी (लगभग 6 बजे सायं)। यह एक और प्रमाण है कि लूका ने प्रेरितों के काम में प्रवचनों का संक्षिप्त रूप दिया। [15]यिर्मयाह 21:12 ने कहा कि न्याय हर ''भोर'' को होना था। यहूदियों का एक नियम था कि जीवन और मृत्यु के मामलों की सुनवाई रात के समय नहीं हो सकती थी-यीशु के सज़्बन्ध में इस नियम को नज़रअन्दाज़ कर दिया गया (नियमों का पालन वे तभी करते थे जब उनसे उनके हितों की पूर्ति होती)। [16]''हाथ खड़े करना'' का अर्थ है ''छोड़ने के लिए तैयार होना।'' [17]''विश्वास'' को व्यापक रूप में प्रयोग करते समय ''आज्ञाकारिता'' के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 3:36 में लिखा है, ''जो पुत्र पर *विश्वास* करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं *मानता,* वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।'' यहां दो पृथक यूनानी शब्दों का प्रयोग किया गया है। [18]मैं इन्हें ''ब्रिज कनवर्शन'' कहता हूं। इसके बारे में मैं बाद में विस्तार से बात करूंगा। [19]क्योंकि हमारे पास पाठ का केवल संक्षिप्त रूप ही है, यह संभव है कि पतरस ने उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए कहा हो, किन्तु जहां तक लिखित संदेश बताता है, उसने ऐसा नहीं किया। [20]अन्य शब्दों में, *ऐन्थरोपॉस* का अर्थ ''मनुष्यजाति'' हो सकता है।

[21]मैं नहीं कहता कि पतरस के पहले प्रवचन के कारण तीन हज़ार बपतिस्मे हो गए, जबकि उसके दूसरे प्रवचन के परिणामस्वरूप दो हज़ार और हो गए। क्योंकि 2:41 के तीन हज़ार लोगों में पुरुष और स्त्रियां शामिल होंगे, और पांच हज़ार केवल पुरुष ही हैं, इसलिए यह वृद्धि संभवत: दो हज़ार से कहीं अधिक होगी। हम निश्चित रूप से कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हैं कि पतरस के दूसरे लिखित प्रवचन के परिणामस्वरूप कितने लोगों ने बपतिस्मा लिया परन्तु लूका के कथन का उद्देश्य निश्चित ही हमें यह संकेत देना है कि यहूदी अगुओं की हरकतों *के बावज़ूद,* पतरस के प्रवचन का अभी भी शक्तिशाली प्रभाव था और इसके कारण *बहुत* से लोग मसीही बन रहे थे। उसके साथ, हमें सन्तुष्ट होना होगा। [22]क्योंकि, आज बहुत सी कलीसियाओं में स्त्रियों की संज़्या पुरुषों से कहीं अधिक होती है, इसलिए हम कुल संज़्या को 15,000-20,000 तक निर्धारित करने को लालायित होते हैं। परन्तु, यह कलीसिया के इतिहास का आरज़्भ था, और पूर्ण नर प्रधानता के वर्ष लदने वाले थे। इस आरज़्भिक कलीसिया में ऐसा नहीं था कि अधिकतर महिलाएं अपने पतियों के मसीही बनने से पहले मसीही बनती हों। समय बीतने के साथ, यह परिवर्तन आया (1 पतरस 3:1, 2)। [23]4:15 में अनुवादित शब्द ''सभा'' के लिए यूनानी शब्द सुनेद्रियोन है; NIV में इस शब्द का अनुवाद ''सन्हेद्रिन'' हुआ है। शब्दावली में देखिए ''महासभा।'' [24]भारत में संसद और उच्चतम न्यायालय, सरकार की वैधानिक और न्यायिक शाखाओं के भाग हैं। [25]यह किसी को उसके पद पर न रहने के बाद ''राष्ट्रपति'' कहने के जैसा है या किसी सेवानिवृत्त अधिकारी के लिए उसकी सैनिक उपाधि का उपयोग करते रहने जैसा है। [26]ध्यान दें लूका 3:2. इस व्यक्ति के द्वारा प्रयोग में लाई गई शक्ति इसमें देखी जाती है कि जब यीशु गिरज़्तार हुआ था, तो वे ''पहले उसे हन्ना के पास ले गए'' (यूहन्ना 18:13)। [27]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''यूहन्ना'' के बजाय ''योनाथन'' मिलता है। योनाथन, हन्ना का एक पुत्र था जो बाद में महायाजक बना। [28]प्रेरितों के समय तक, यहूदी याजकाई की सज़्पूर्ण प्रणाली भ्रष्टाचार से छलनी हो चुकी थी। व्यवस्था में महायाजक की अधिकृत नियुक्ति के

स्थान पर, इस पदवी की चाह शक्ति के लिए की जाती थी; महायाजक आए और चले गए। अभी भी, महायाजक मुट्ठी भर परिवारों में से ही होते थे। ये शक्तिशाली और प्रभावशाली परिवार ''महायाजकों के वंश'' के ही थे। [29]परम्परा के अनुसार, महासभा (सन्हेद्रिन) में सत्तर सदस्य होते थे। इसके अतिरिक्त एक महायाजक होता था। [30]याद रखें कि महायाजक के परिवार के ''जितने'' भी लोग थे, सब वहां उपस्थित थे। और, न्यायाधीशों के इर्द-गिर्द और लोग, मुख्यत: जवान थे, जो ''सलाहकार समिति'' के रूप में काम करते थे। ये लोग वास्तव में, ''प्रशिक्षण ले रहे न्यायाधीश'' थे।

[31]आयत 14. शायद उसे न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश मिला था, परन्तु ऐसा लगता नहीं है। शायद यह एक आम सुनवाई थी जिसमें कोई भी आ सकता था, और वह उनके साथ आया जिन्होंने उसे चंगा किया था। हो सकता है कि उसने गुप्त सुनवाई के लिए दबाव डाला हो। कोई भी व्याख्या पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है, और लूका ने इसे हमें बताने की आवश्यकता नहीं समझी। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वह वहां *था,* जिससे न्यायालय मुश्किल में पड़ गया (आयत 14)। [32]सदूकी ''बहुत क्रोधित हुए कि वे ... यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे'' (आयतें 1, 2), परन्तु वे पतरस और यूहन्ना पर झूठी शिक्षा देने का आरोप नहीं लगा सके, क्योंकि *फरीसी* शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास रखते थे और कुछेक शक्तिशाली फरीसी महासभा के सदस्य थे (ध्यान दें 5:34)। [33]अन्तिम दो पंक्तियां रिचर्ड रोजर्स के प्रवचन, ''द फर्स्ट अपोज़िशन अर्थात पहला विरोध'' से ली गई हैं। यह संदेश सन्सेट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, लब्बौक, टैक्सास, (n.d.) में प्रचार किया गया। [34]प्रेरितों 2:22 पर नोट्स में ''आश्चर्यकर्म'' शब्द पर व्याख्या देखें। [35]जेम्स मौफ़ट चार्ल्स बी. विलीयम्ज़, सी. एच. रियू, और ऐडगर जे. गुडस्पीड समेत बहुत से अनुवादक यही मानते हैं, पिछले पाठ के आरम्भ में नाम की धारणा पर चर्चा देखें।